Class- B.A(Hons.) SANSKRIT GE 2nd sem

Subject- Nationalism and Indian literature

Topic- माखन लाल चतुर्वेदी की रचनाओं में चित्रित राष्ट्रीयता का वर्णन।

पिछली कक्षाओं में हमने हिन्दी साहित्य में वर्णित राष्ट्रीयता पर चर्चा की। जिस सन्दर्भ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आदि हिन्दी साहित्यकारों की रचनाओं में राष्ट्रीयता का वर्णन किया था। उसी विषय को आगे बढ़ाते हुये माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाओं में राष्ट्रीयता का वर्णन किया जायेगा।

हिन्दी साहित्य में वर्णित राष्ट्रीयता-

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनायें-भारत जननी और भारत दुर्दशा।

2. रामधारी सिंह दिनकर की रचनायें-प्रणति, हिमालय, मेरे प्यारे देश, मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा।

3. जयशंकर प्रसाद की रचनायें-मधुमय देश हमारा और हमारा प्यारा भारतवर्ष आदि।

4. मैथिलीशरण गुप्त की रचनायें- मातृभूमि, भूमि भाग्य-सा भारतवर्ष, भारतभारती आदि।

5. माखन लाल चतुर्वेदी की रचनायें- पुष्प की अभिलाषा, वीरव्रती आदि।

6. सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनायें- झांसी की रानी और विदा आदि।

हिन्दी साहित्य में श्री माखनलाल चतुर्वेदी(सन्1889-1968ई.) को मुर्धन्य कवि, लेखक और पत्रकार के रूप में जाना जाता है जिनकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हैं। इनका जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में बाबई नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम नन्दलाल चतुर्वेदी था जो गाँव के प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे। प्राइमरी शिक्षा के बाद घर पर ही इन्होंने संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

इनका पारिवारिक वातावरण राधावल्लभी सम्प्रदाय के अनुयायी होने से धार्मिक था। दूसरी ओर गाँव, समाज और देश के तत्कालीन वातावतरण ने इन्हें एक देशभक्त और क्रान्तिकारी बनाने में सहायता पहुँचाई। प्रारम्भ से ही देश की दशा के प्रति अत्यन्त जागरूक रहे और अपनी किशोरावस्था में उग्रवादी तिलक के अनुयायी बने। शिक्षा पूरी होते ही इन्होंने अध्यापन का कार्य प्रारम्भ किया।

श्री माखनलाल चतुर्वेदी सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे हिंदी रचनाकार थे। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठत पत्रों के संपादक के रूप में इन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ कर बाहर आए। इसके लिये इन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा। वे सच्चे देशप्रमी थे और असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। इनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्रकृति-प्रेम का भी चित्रण हुआ है।

इनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं- हिमकिरीटनी, हिमतरंगिणी, माता, युगचरण, समर्पण, वेणु लो गूँजे धरा आदि। इन सबके अतिरिक्त ‘कृष्णार्जुन युद्ध’ नामक नाटक, ‘कला का अनुवाद’ नामक कहानी-संग्रह जैसी कई अन्य रचनायें भी प्रकाशित की हैं।

इनकी अधिकांश रचनायें राष्ट्रीयता के ताने-बाने से बंधी हुई हैं। इनकी वाणी राष्ट्र के मर्म की वाणी है । चतुर्वेदी जी के काव्य में बलिदान और प्राणोत्सर्ग का आग्रह है । ‘हिमकिरीटिनी’ में युवकों को सन्देश देते हुये कहा है-

“खून हो जाये न ते देख, पानी,

मरण का त्योहार, जीवन की जवानी ।”

18 फरवरी, सन् 1922 ई. में चतुर्वेदी जी ने बिलासपुर जेल में ‘पुष्प की अभिलाषा’ नामक कविता लिखी, जिसमें उन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिये भारतीयों से आत्म-समर्पण का आवाहन किया-

“मुझे तोड़ लेना वनमाली!

उस पथ पर देना तुम फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने

जिस पथ जावें वीर अनेक ।”

प्रस्तुत कविता में एक पुष्प भी देश के प्रति और देश के लिये लड़ रहे वीर के प्रति अपने बलिदान को तैयार है। पुष्प भी चाहता है कि जो वीर देश के लिये आत्मबलिदान को तैयार है तो क्यों न उसके मार्ग को ही सुगम बनाने के लिये मैं अपना बलिदान दे दूँ इसलिये हे वनमाली! मुझे उस वीर सैनिक के पथ पर फेंक देना।

इनकी कविताओं में राष्ट्रीयता अनेकानेक छवियों के साथ दिखाई देती है। राष्ट्र के प्रति स्नेह एवं श्रद्धा, देशवासियों के लिये जागरण का सन्देश, विदेशी शासन के प्रति विद्रोह, सत्याग्रह के प्रति आस्था, बलिदान की भावना आदि को दर्शाने वालि उनकी कविताओं मे राष्ट्रीयता के लगभग सभी प्रमुख तत्त्वों का समावेश हुआ है।

इनकी राष्ट्रीय कविताओं में कहीं भारत माता की वन्दना है, कहीं शक्ति और उत्साह का आवाहन है और कहीं देश की गुलामी को लेकर गहरी पीड़ा है। स्वयं स्वराज्य-प्राप्ति के आन्दोलन में भाग लिया था, जनता को निकट से देखा, इसीलिये उनकी राष्ट्रीय कविताएँ इतनी सजीव, ओजस्विनी और प्रेरणामयी हैं। उन्होंने सन् 1920ई. में 'तिलक' नामक एक लम्बी कविता लिखी, जिसकी अन्तिम पंक्तियाँ हैं-

"बन्दी होवे वह दयाहीन

तू भारतीय आज़ाद रहे।

वह स्वर्ग टूट कर गिरजाये,

यह आर्यभूमि आबाद रहे।"

इसी प्रकार विदेशी शासन के विरोध में इन्होंने जोर से ललकारते हुए कहा है-

"बलि होने की परवाह नहीं

मैं हूँ कष्टों का राज्य रहे।

मैं जीता, जीता, जीता हूँ

माता के हाथ स्वराज्य रहे।"

गांधी के व्यक्तिव और विचारों का माखनलाल चतुर्वेदी पर गहरा प्रभाव पड़ा। 'बापु के प्रति', 'एक तुम हो', 'बापू तुम होते', 'बापु का बरस दिन' तथा अन्य कई गीतों में गांधी जी के महान् व्यक्तिव और गांधीवाद में उनकि गहरी अस्था देती है। विनोबा भावे से भी इनका जीवन प्रभावित रहा और इन्होंने कहा-

"अब तो बापू के इन बोझों को,

ढोएगा सिर्फ विनोबा।"

कई वर्षों के बाद देशवासियों की मुक्ति की अभिलाषा पूरी हुई । देश की जनता आज़ादी के उल्लास में मग्न थी । उसी उल्लास को माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने गीत 'मुक्त गगन है, मुक्त पवन है' में उमंग के साथ अभिव्यक्त किया ।

स्वतन्त्रता के बाद की अपनी रचनाओं में वे सत्ता में बैठे स्वार्थी, पदलोलुप और निष्क्रिय लोगों को देखकर दुःखी दिखाई देते हैं । सन् 1958ई. में लिखी गयि अपनी कविता 'विरव्रती' में इन्होंने स्वाधीनता के सुन्दर स्वप्न को बिगाड़ने वाले स्वार्थी तत्त्वों को ललकारा है और इसके परिमार्जन के लिये रचनाकारों तथा युवाओं का आवाहन किय् आहै । उनकी इस ललकार में भी देशप्रेम झलकता है- **"स्वर बदलो अपना, वीरव्रती! वह स्वर बदलो ।"**

स्पष्ट ही माखनलाल चतुर्वेदी मूलतः राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं । इनके काव्य में राष्ट्रीयता, सामयिकता और शाश्वत युगबोध की समर्थ अभिव्यक्ति है । इनकी कवि-वाणी देशभक्ति और राष्ट्र-चेतना के उदगारों से परिपूर्ण है ।

पुष्प की अभिलाषा

https://kaavyaalaya.org/pushp_kee_abhilaashaa

सिपाही

http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A5%80_/_%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%96%E0%A4%A8%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2_%E0%A4%9A%E0%A4%A4%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A5%87%E0%A4%A6%E0%A5%80

युग-ध्वनि

http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%AF%E0%A5%81%E0%A4%97%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%A8%E0%A4%BF_/_%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%96%E0%A4%A8%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B2_%E0%A4%9A%E0%A4%A4%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A5%87%E0%A4%A6%E0%A5%80